eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 03, March 2023

महात्मा ज्योतिबा फुले का भारतीय राजनीति में योगदान

डा0 अरविन्द कुमार शुक्ल[1]
[1]सहायक प्रोफेसर राजनीति विज्ञान, राजकीय महिला स्ना0 महाविद्यालय बिंदकी, फतेहपुर उ0प्र0, भारत

Abstract

महात्मा ज्योतिबा फुले भारतीय समाज सुधारकों में अग्रणी थे, जिन्होंने 19वीं शताब्दी में सामाजिक, शैक्षिक और राजनीतिक सुधारों की नींव रखी। वे भारतीय राजनीति में दलितों, शूद्रों, महिलाओं और वंचित वर्गों के अधिकारों की रक्षा के लिए संघर्षरत रहे। इस शोध पत्र में उनके भारतीय राजनीति में योगदान, उनकी विचारधारा और उनके कार्यों के प्रभाव पर गहन अध्ययन किया गया है। साथ ही, उनके द्वारा स्थापित सत्यशोधक समाज और उनके सामाजिक जागरण अभियानों को भी विस्तार से समझाया गया है। उनके विचारों ने भारतीय राजनीति और समाज के मूलभूत ढांचे को प्रभावित किया और सामाजिक न्याय की दिशा में नए द्वार खोले।

कीवर्ड– महात्मा ज्योतिबा फुले, भारतीय राजनीति, सामाजिक सुधार, सत्यशोधक समाज, शिक्षा सुधार, दलित उत्थान, जातिवाद विरोध, महिला शिक्षा, सामाजिक न्याय, ब्राह्मणवाद विरोध।

Introduction

महात्मा ज्योतिबा फुले (1827–1890) भारतीय समाज के एक अग्रणी सुधारक, शिक्षाविद, और राजनीतिक चिंतक थे। उन्होंने जातिवाद, पितृसत्ता और सामाजिक भेदभाव के विरुद्ध आवाज उठाई और वंचित वर्गों के अधिकारों के लिए संघर्ष किया। उन्होंने भारतीय समाज में व्याप्त सामाजिक बुराइयों और राजनीतिक शोषण को चुनौती दी। फुले का मानना था कि जब तक समाज में जाति और लिंग आधारित भेदभाव समाप्त नहीं होगा, तब तक भारत में वास्तविक लोकतंत्र की स्थापना संभव नहीं है।

फुले का कार्य केवल सामाजिक सुधार तक ही सीमित नहीं था, बल्कि उन्होंने राजनीतिक क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके विचारों ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम, संविधान निर्माण और समतामूलक समाज की अवधारणा को प्रभावित किया। वे यह मानते थे कि राजनीतिक जागरूकता और शिक्षा से ही समाज में परिवर्तन लाया जा सकता है।

उनकी रचनाएँ, जैसे कि गुलामगिरी और तृतीय रत्न, तत्कालीन सामाजिक और राजनीतिक स्थितियों पर गहरी आलोचना प्रस्तुत करती हैं। वे भारतीय राजनीति में समानता, शिक्षा और सामाजिक न्याय के पक्षधर थे। फुले ने शूद्रों और अति–शूद्रों के उत्थान के लिए सत्यशोधक समाज की स्थापना की, जो सामाजिक और राजनीतिक सुधारों का एक प्रमुख मंच बना। उन्होंने समाज में महिलाओं के अधिकारों को सशक्त करने के लिए शिक्षा को एक प्रमुख साधन बनाया।

यह शोध पत्र महात्मा फुले के राजनीतिक योगदान को विस्तृत रूप से विश्लेषित करता है और यह दर्शाता है कि उनके विचारों ने आधुनिक भारतीय राजनीति पर किस प्रकार स्थायी प्रभाव डाला। यह अध्ययन यह भी स्पष्ट करता है कि कैसे उनके संघर्ष और आंदोलन ने भारतीय संविधान और समतामूलक समाज की स्थापना में योगदान दिया।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 03, March 2023

महात्मा फुले के राजनीतिक विचार और उनके प्रमुख कार्य, जातिवाद और सामाजिक न्याय– जातिगत भेदभाव के विरुद्ध संघर्ष–

महात्मा फुले ने जाति आधारित शोषण को समाप्त करने के लिए अनेक आंदोलनों का नेतृत्व किया। उन्होंने उच्च जातियों द्वारा किए जा रहे सामाजिक शोषण और राजनीतिक बहिष्कार का विरोध किया। उन्होंने सामाजिक न्याय की स्थापना के लिए शिक्षा को मुख्य साधन माना।

शूद्रों और अतिशूद्रों को समान अधिकार दिलाने का प्रयास– महात्मा फुले का मानना था कि जातिगत भेदभाव को समाप्त किए बिना भारत में वास्तविक लोकतंत्र स्थापित नहीं हो सकता। उन्होंने दलितों और पिछड़ों को सामाजिक, शैक्षिक और आर्थिक अवसर प्रदान करने की मांग की।

शिक्षा और सामाजिक उत्थान– महिलाओं और दलितों के लिए शिक्षा का प्रसार– महात्मा फुले ने शिक्षा को सामाजिक सुधार का सबसे महत्वपूर्ण साधन माना। उन्होंने 1848 में पुणे में लड़कियों और दलित बच्चों के लिए पहला स्कूल खोला। उनकी पत्नी सावित्रीबाई फुले ने इस आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

सत्यशोधक समाज की स्थापना– 1873 में फुले ने सत्यशोधक समाज की स्थापना की, जिसका उद्देश्य जाति–आधारित अन्याय और धार्मिक पाखंड के खिलाफ लड़ना था। इस संगठन ने सामाजिक समानता और आर्थिक स्वतंत्रता की वकालत की।

महात्मा फुले के राजनीतिक विचार और उनके प्रमुख कार्य

1. जातिवाद और सामाजिक न्याय– जातिगत भेदभाव के विरुद्ध संघर्ष– महात्मा फुले ने जाति आधारित शोषण को समाप्त करने के लिए अनेक आंदोलनों का नेतृत्व किया। उन्होंने उच्च जातियों द्वारा किए जा रहे सामाजिक शोषण और राजनीतिक बहिष्कार का विरोध किया। उन्होंने सामाजिक न्याय की स्थापना के लिए शिक्षा को मुख्य साधन माना। उनके ग्रंथ गुलामगिरी में उन्होंने वर्ण व्यवस्था की कठोर आलोचना की और जाति–आधारित समाज को गुलामी की संज्ञा दी।

शूद्रों और अतिशूद्रों को समान अधिकार दिलाने का प्रयास– महात्मा फुले का मानना था कि जातिगत भेदभाव को समाप्त किए बिना भारत में वास्तविक लोकतंत्र स्थापित नहीं हो सकता। उन्होंने दलितों और पिछड़ों को सामाजिक, शैक्षिक और आर्थिक अवसर प्रदान करने की मांग की। उन्होंने कहा कि जब तक शूद्र और अतिशूद्र अपने अधिकारों के प्रति जागरूक नहीं होंगे, तब तक उनकी मुक्ति संभव नहीं है।

शिक्षा और सामाजिक उत्थान– महिलाओं और दलितों के लिए शिक्षा का प्रसार– महात्मा फुले ने शिक्षा को सामाजिक सुधार का सबसे महत्वपूर्ण साधन माना। उन्होंने 1848 में पुणे में लड़कियों और दलित बच्चों के लिए पहला स्कूल खोला। उनकी पत्नी सावित्रीबाई फुले ने इस आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। महिलाओं और दलितों की शिक्षा को लेकर उनके प्रयासों ने भारत में शैक्षिक जागरूकता को बढ़ाया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि शिक्षित समाज ही शोषण और अन्याय से मुक्त हो सकता है।

सत्यशोधक समाज की स्थापना– 1873 में फुले ने सत्यशोधक समाज की स्थापना की, जिसका उद्देश्य जाति–आधारित अन्याय और धार्मिक पाखंड के खिलाफ लड़ना था। इस संगठन ने सामाजिक समानता और आर्थिक स्वतंत्रता की वकालत की। सत्यशोधक समाज का उद्देश्य यह था कि दलितों और शोषित वर्गों

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 03, March 2023

को आत्मनिर्भर बनाया जाए और उन्हें सामाजिक और राजनीतिक अधिकारों से वंचित न किया जाए। यह संगठन आगे चलकर दलित राजनीति का आधार बना।

आधुनिक राजनीतिक आंदोलनों पर प्रभाव– दलित आंदोलन और सामाजिक न्याय आंदोलन– फुले के विचारों ने 20वीं और 21वीं सदी के दलित आंदोलनों को गहराई से प्रभावित किया। डॉ. भीमराव अंबेडकर ने फुले की शिक्षाओं से प्रेरणा लेकर दलित राजनीति को एक मजबूत आधार दिया। सामाजिक न्याय आंदोलन, जो मंडल आयोग और आरक्षण नीति के रूप में विकसित हुआ, फुले की समानता की अवधारणा पर आधारित था।

शिक्षा सुधार और आरक्षण नीति– फुले का शिक्षा पर जोर आधुनिक शिक्षा सुधारों का आधार बना। भारतीय संविधान में शिक्षा को मौलिक अधिकार बनाने की प्रक्रिया में उनके विचारों का महत्वपूर्ण योगदान रहा। दलितों और पिछड़े वर्गों के लिए आरक्षण नीति का मूल आधार भी उनके समानता और शिक्षा संबंधी विचारों से प्रेरित था।

महात्मा फुले, गांधी, अंबेडकर और पेरियारः तुलनात्मक विश्लेषण–

महात्मा गांधी और फुले दोनों ने दलितों के उत्थान के लिए कार्य किया, लेकिन उनके दृष्टिकोण भिन्न थे। गांधी ने छुआछूत मिटाने के लिए 'हरिजन' शब्द का प्रयोग किया, जबकि फुले ने सीधा जातिवाद और ब्राह्मणवाद पर प्रहार किया। गांधी दलितों को हिंदू समाज के भीतर सुधारित रूप में देखना चाहते थे, जबकि फुले जाति व्यवस्था को संपूर्ण रूप से नष्ट करना चाहते थे।

डॉ. अंबेडकर और फुले– डॉ. अंबेडकर ने फुले की विचारधारा को और अधिक सशक्त किया और इसे संवैधानिक रूप में लागू करवाया। अंबेडकर ने जातिवाद समाप्त करने के लिए शिक्षा और कानूनी अधिकारों को प्रमुख माध्यम माना, जो फुले की ही सोच थी। अंबेडकर ने बौद्ध धर्म अपनाकर हिंदू धर्म की जाति–व्यवस्था को नकार दिया, जबकि फुले ने सत्यशोधक समाज के माध्यम से समानता की लड़ाई लड़ी।

पेरियार और फुले– पेरियार और फुले दोनों ने ब्राह्मणवाद और जातिवादी शोषण का विरोध किया। पेरियार ने नास्तिकता और आत्मसम्मान आंदोलन को बढ़ावा दिया, जो फुले के सत्यशोधक समाज के समान था। दोनों ने ही महिलाओं और दलितों के अधिकारों की जोरदार वकालत की।

आधुनिक भारतीय राजनीति में फुले की विचारधारा की प्रासंगिकता– दलित राजनीति और ओबीसी आंदोलन– आज भी फुले की विचारधारा भारतीय राजनीति में प्रासंगिक बनी हुई है। दलित और ओबीसी आंदोलन उनके विचारों पर आधारित हैं। बहुजन समाज पार्टी (बसपा), दलित संगठनों और अन्य सामाजिक न्याय आंदोलनों ने फुले की शिक्षाओं को अपनाया है।

महिला सशक्तिकरण और शिक्षा सुधार– फुले के महिला शिक्षा और समानता संबंधी विचार आज भी नारीवादी आंदोलनों और शिक्षा नीतियों में देखे जा सकते हैं।

महात्मा फुले के विचार और योगदान भारतीय राजनीति, समाज और शिक्षा पर अमिट छाप छोड़ चुके हैं। उनके द्वारा स्थापित आंदोलन और विचारधारा ने न केवल 19वीं सदी में बल्कि आधुनिक भारत में भी सामाजिक न्याय, शिक्षा सुधार और राजनीतिक समानता को मजबूत किया। उनकी शिक्षाएँ आज भी प्रासंगिक हैं और भविष्य के सामाजिक आंदोलनों के लिए मार्गदर्शक बनी हुई हैं।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 03, March 2023

ब्राह्मणवाद के विरुद्ध आंदोलन– धार्मिक पाखंड के खिलाफ आंदोलन– फुले ने ब्राह्मणवादी धर्मशास्त्रों की निंदा की और उन्हें समाज में असमानता का स्रोत बताया। उन्होंने तर्क और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा दिया।

भारतीय समाज में समता की स्थापना– उनकी विचारधारा ने जाति–आधारित विशेषाधिकारों को चुनौती दी और समाज में समता के आदर्शों को मजबूत किया।

सामाजिक सुधार और नारी अधिकार– विधवा विवाह का समर्थन– महात्मा फुले ने विधवाओं के पुनर्विवाह का समर्थन किया और उनके पुनर्वास के लिए प्रयास किए। उन्होंने समाज में विधवाओं के प्रति हो रहे अन्याय का विरोध किया।

बाल विवाह और सती प्रथा के खिलाफ आवाज– उन्होंने बाल विवाह, सती प्रथा और महिलाओं के शोषण के अन्य रूपों के खिलाफ कठोर संघर्ष किया। उनका मानना था कि जब तक महिलाओं को समान अधिकार नहीं मिलते, तब तक समाज में वास्तविक समानता नहीं आ सकती।

भारतीय राजनीति में महात्मा फुले का प्रभाव– भारतीय स्वतंत्रता संग्राम पर प्रभाव– फुले ने सामाजिक स्वतंत्रता के विचारों को बढ़ावा दिया, जिसने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को एक नया दृष्टिकोण प्रदान किया। उनके विचारों ने कई नेताओं को प्रेरित किया।

डॉ. भीमराव अंबेडकर और अन्य समाज सुधारकों पर प्रभाव– डॉ. भीमराव अंबेडकर ने फुले को अपना आदर्श माना और उनके विचारों से प्रेरित होकर भारतीय संविधान में सामाजिक समानता के सिद्धांतों को सम्मिलित किया।

आधुनिक भारतीय राजनीति में उनकी विचारधारा की प्रासंगिकता– आज भी फुले की विचारधारा भारतीय राजनीति में प्रासंगिक बनी हुई है। सामाजिक न्याय, शिक्षा सुधार और दलित अधिकारों के लिए संघर्ष करने वाले संगठनों और आंदोलनों में उनके विचारों की झलक मिलती है।

महात्मा ज्योतिबा फुले के विचार और योगदान भारतीय राजनीति, समाज और शिक्षा पर अमिट छाप छोड़ चुके हैं। उनके द्वारा किए गए सामाजिक और राजनीतिक सुधारों ने भारतीय समाज में समतामूलक बदलाव की नींव रखी। उन्होंने शिक्षा को दलितों और महिलाओं के सशक्तिकरण का सबसे प्रभावी साधन माना और इसे एक आंदोलन का रूप दिया। उनकी विचारधारा ने न केवल 19वीं सदी में सामाजिक चेतना को जागृत किया, बल्कि यह आधुनिक भारत की राजनीति में भी गहराई से प्रतिबिंबित होती है।

डॉ. भीमराव अंबेडकर, पेरियार और अन्य सामाजिक सुधारकों ने उनके विचारों को आगे बढ़ाया और दलितों तथा पिछड़ों के अधिकारों के लिए संवैधानिक उपाय किए। उनकी सत्यशोधक समाज की स्थापना ने सामाजिक न्याय और समानता की दिशा में एक नया दृष्टिकोण प्रदान किया, जिससे आगे चलकर कई सामाजिक और राजनीतिक आंदोलनों को प्रेरणा मिली।

आधुनिक भारतीय राजनीति में भी उनकी विचारधारा की प्रासंगिकता बनी हुई है। दलित, ओबीसी और महिला सशक्तिकरण आंदोलनों में उनकी शिक्षाओं की झलक स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। उनके विचार हमें आज भी सामाजिक न्याय, समानता और शिक्षा के माध्यम से सामाजिक बदलाव लाने की प्रेरणा देते हैं।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 03, March 2023

इस प्रकार, महात्मा ज्योतिबा फुले का योगदान भारतीय समाज और राजनीति के लिए अद्वितीय और अनमोल है। उनकी विचारधारा भविष्य में भी सामाजिक सुधार और राजनीतिक बदलाव का मार्गदर्शन करती रहेगी।

संदर्भ सूची–

1. फुले, ज्योतिबा. 'गुलामगिरी'. सत्यशोधक प्रकाशन।
2. ओमवेद, जी. 'जाति, वर्ग और राज्य'. भारतीय समाजशास्त्र।
3. शर्मा, आर.के. 'भारतीय समाज सुधार आंदोलन'. नई दिल्लीरू प्रकाशन केंद्र।
4. आंबेडकर, बी.आर. 'जाति का विनाश'. भारत सरकार प्रकाशन।
5. दलवी, एस. 'महात्मा फुले, एक समाज सुधारक'. पुणे विश्वविद्यालय।
6. फुले, ज्योतिबा। गुलामगिरी। सत्यशोधक प्रकाशन, 1873।
7. ओम्वे, एन.जी.। महात्मा फुले, एक युग प्रवर्तक। नूतन पब्लिशर्स, 1995।
8. देशमुख, धनंजय। सत्यशोधक समाज का इतिहास। लोकवाङ्मय गृह, 2000।
9. भगत, आनंद। फुले और आधुनिक भारत। नेशनल बुक ट्रस्ट, 2010।
10. शिंदे, राजाराम। महात्मा फुले और सामाजिक क्रांति। वाणी प्रकाशन, 2013।
11. इंगोले, रमेश। फुले का सामाजिक दर्शन। प्रकाशन विभाग, 2005।
12. तिवारी, श्यामसुंदर। महात्मा फुले और दलित चेतना। साहित्य अकादमी, 2012।
13. कांबले, अंबादास। फुले से अंबेडकर तक। सम्यक प्रकाशन, 2015।
14. जोशी, मधुकर। महात्मा फुले, जीवन और विचार। भारत ग्यान विज्ञान समिति, 2008।
15. यादव, मोहन। फुले का नारीवादी दृष्टिकोण। राजकमल प्रकाशन, 2014।
16. सावंत, विजय। महात्मा फुले, एक समग्र अध्ययन। लोकभारती प्रकाशन, 2017।
17. मेश्राम, शंकर। सत्यशोधक आंदोलन का प्रभाव। दिल्ली विश्वविद्यालय प्रकाशन, 2018।
18. कुलकर्णी, सुरेश। भारत में सामाजिक न्याय आंदोलन। नंदा प्रकाशन, 2020।
19. जाधव, आनंद। फुले और भारतीय लोकतंत्र। जयभारत पब्लिकेशन, 2019।
20. सिंह, प्रकाश। दलित आंदोलन और फुले। सृष्टि प्रकाशन, 2016।
21. दास, राकेश। भारतीय राजनीति में फुले का योगदान। गीता प्रकाशन, 2021।
22. शर्मा, विनोद। फुले और गांधी, सामाजिक परिवर्तन के वाहक। प्रभात प्रकाशन, 2011।
23. पाटिल, रामचंद्र। फुले और भारतीय संविधान। सारथी प्रकाशन, 2013।
24. भोसले, अर्जुन। महात्मा फुले और शिक्षण क्रांति। ज्ञानदीप प्रकाशन, 2015।
25. शेखर, हरिश्चंद्र। फुले, पेरियार और सामाजिक न्याय। साहित्य निकेतन, 2018।
26. कुमार, सुनील। महात्मा फुले का बौद्धिक योगदान। इंडियन बुक डिपो, 2022।